मिशन शिक्षण संवाद

चार आश्रम

काव्य मंजरी
शैक्षिक कविताओं का संकलन

संकलनकर्ता
राज कुमार शर्मा
मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

आश्रम : ब्रह्मचर्य

01

इन्द्रिय संयम ,ब्रह्म की चर्चा ,ब्रह्मचर्य कहलाए,
वेद अध्ययन, शस्त्राभ्यास,आत्मज्ञानी बनाए।
ब्रह्म यज्ञ को जानकर ऋषिऋण चुकता हो जाए,
इन सबको समझकर जीवन सार्थक हो जाए।

पुरुषार्थ का प्रथम अंग धर्म,तीन आश्रम का आधार,
इसको जान लिया अगर,भवसागर पार।
25 वर्ष ब्रह्मचर्य धारणकर पुरूष ,वसु अवतार,
ब्रह्मचर्य पालन कर लिया,महिमा अपरम्पार।।

ब्रह्मचर्य का पालन करके,करे जो वेदाभ्यास ,
प्राण,इंद्रिया, अंत:करण, शुद्धता का वास।
समतुल्य इस आयु में,शारीरिक ,मानसिक,विकास,
कनिष्ठ ,मध्यम, और उत्तम ब्रह्मचर्य के प्रकाश।।

रचना-नम्रता श्रीवास्तव(प्र.अ.)
प्राथमिक विद्यालय बढ़ह स्योढ़ा
महुआ,(बाँदा)

मिशन शिक्षण संवाद

आश्रम : गृहस्थ

02

गृहस्थ जीवन भी एक तप है ,
निभाना इसको भी एक व्रत है ।
मानो तो विवाह भी एक समर्पण है,
एक-दूजे की आस्था का दर्पण है ।।

पूर्व तक स्वतंत्रता प्यारी थी जिनको,
अब जिम्मेदारियां निभानी हैं उनको।
पत्नी ने छोड़ा अपना पीहर है,
पति ने भी बदला अपना जीवन है ।।

घर और समाज के रिश्ते निभाने लगते हैं,
बच्चों के खातिर अपनी खुशियाँ त्याग करते हैं ।
धर्म,अर्थ ,मोक्ष की बातें समझनी हैं सारी,
50 वर्ष की आयु तक निभानी है जिम्मेदारी।।

गृहस्थ आश्रम भी एक तप है,
निभाना इसको भी एक व्रत है ।

रचना-अन्जली गुप्ता (प्र.अ.)
प्रा.वि. चिल्ली
बडोखर खुर्द,(बाँदा)

मिशन शिक्षण संवाद

आश्रम : वानप्रस्थ

03

वानप्रस्थ आश्रम को जानों तृतीय भाग कहलाए,
जीवन के 50 से 75 वर्ष निरन्तर ये जाए।
वानप्रस्थ का अर्थ है, प्रस्थान अरण्य को करना,
हिन्दू धार्मिक संस्कारों में चौदहवाँ संस्कार समझना।।

पितृ-भार से मुक्ति पाकर ज्येष्ठ पुत्र को दे जिम्मेदारी,
सामाजिक उत्थान हेतु करते हैं अपनी हिस्सेदारी।
हाथ कमण्डल, धार जनेऊ, पीले वस्त्र सुहाय,
निज परिवार त्याग करके वो राष्ट्र धर्म अपनाय।।

वानप्रस्थ को वेदोक्त दो भागों में करें विभाजित,
वेदाध्ययन, व्रत पाठ ध्यान, 'तापस वानप्रस्थ, नियोजित ।
कठिन साधना, घोर तपस्या, 'सान्यासिक वानप्रस्थ कहलाए,
ब्रहमचर्य, परमार्थ, स्वस्थ भावनाओं को उच्च बनाये।।

रचना-रीता गुप्ता (स.अ.)
पू.मा.वि. कलेक्टर पुरवा
महुआ (बाँदा)

मिशन शिक्षण संवाद

आश्रम : सन्यास

04

सन्यास तटस्थता निवृत्ति निस्संगता ,
निर्लिप्तता ,अनासक्ति का है अलगाव,
कर्म में व्यस्तता की प्रक्रिया में
तनाव से मुक्ति की युक्ति का है सुझाव।।

सन्यास एक नए जीवन का जन्म है,
विलक्षण व्यक्तित्व के जन्म का आवाहन है।
समग्र सृष्टि उसके भीतर है,
सभी जीवों का अभयदान है।।

स्वयं को ईश्वर को समर्पित करना,
मुक्त भाव से ईश्वर की सृष्टि का सम्मान है।
तुम्हारी निजता व स्वतंत्रता की घोषणा है,
अंतर्मन की क्षुधा को शांत कर सको सन्यास है ।।

रचना-निशा देवी (स.अ.)
प्रा. वि.-दिखितवारा
नरैनी (बाँदा)

रचनाकारों की सूची

नम्रता श्रीवास्तव,बाँदा
अंजली गुप्ता, बाँदा
रीता गुप्ता, बाँदा
निशा देवी,बाँदा

इमेज निर्माण- आर.के.शर्मा,चित्रकूट
संकलन सहयोग- राजेश तिवारी बाँदा
टेक्निकल सहयोग- वन्दना यादव, जौनपुर

- संकलन -

मिशन शिक्षण संवाद